यूक्रेनी लोक कथा

गरीब युवा और राजकुमारी

चित्र: जे. क्रिहा, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

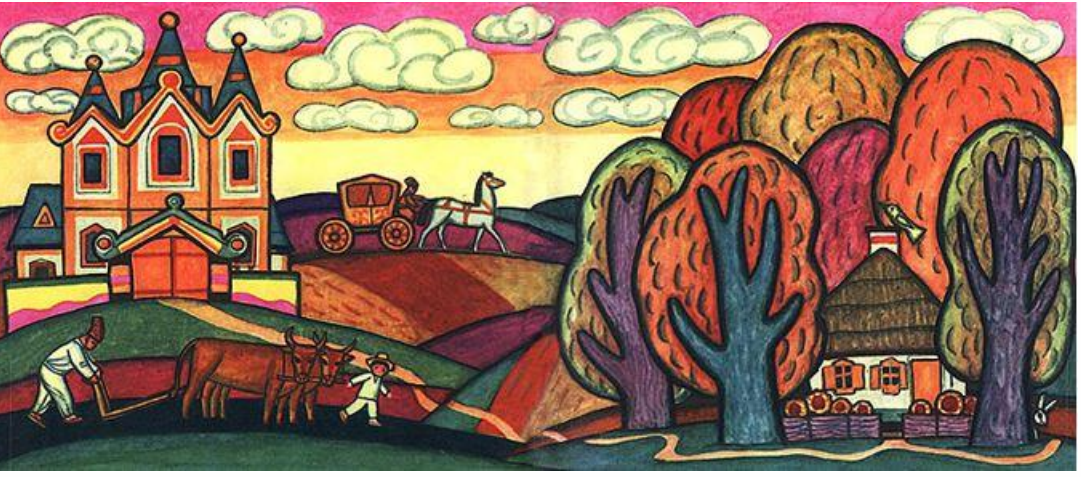

पुराने जमाने की बात है, एक महिला अपने
बेटे के साथ जंगल में एक झोपड़ी में रहती थी.

उनके पास गेहूं उगाने के लिए ज़मीन नहीं थी क्योंकि चारों ओर घना जंगल था, इसलिए उन्हें अपनी डबलरोटी खरीदनी पड़ती थी. एक दिन, जब घर में कोई डबलरोटी नहीं बची, तो महिला ने अपने बेटे को कुछ डबलरोटी खरीदने के लिए भेजा.

"देखो, बेटा," उसने कहा. "ये पैसे लो और एक डबलरोटी ले आओ."

युवक ने पैसे लिए और चल पड़ा. वो चलता रहा और चलता रहा जब तक कि उसकी मुलाकात एक आदमी से नहीं हुई जो एक कुत्ते को जंगल की ओर ले जा रहा था.

"नमस्ते सर!" युवा ने कहा.

"नमस्ते!" उस आदमी ने उत्तर दिया.

"आप कुत्ते को कहां ले जा रहे हैं?"

"मैं उसे फांसी देने के लिए जंगल में ले जा रहा हूं, क्योंकि कुत्ता अब बहुत बूढ़ा हो गया है और अब वो मेरे किसी काम का नहीं है."

"अरे उसे फांसी मत दें, सर. उसकी बजाए आप उसे मुझे बेच दें."

"तो फिर तुम उसे खरीद लो."

"आप उसके कितने पैसे चाहते हैं?"

“तुम कितने दोगे?”

युवक ने उस आदमी को वे सभी पैसे दे दिए जो उसकी मां ने उसे डबलरोटी खरीदने के लिए दिए थे. फिर उसने कुत्ता लिया और घर चला गया.

"अच्छा बेटा, क्या तुमने डबलरोटी खरीदी?" उसकी मां ने पूछा, जब लड़का घर पहुंचा.

"नहीं मां, मैंने डबलरोटी नहीं खरीदी."

"क्यों नहीं?"

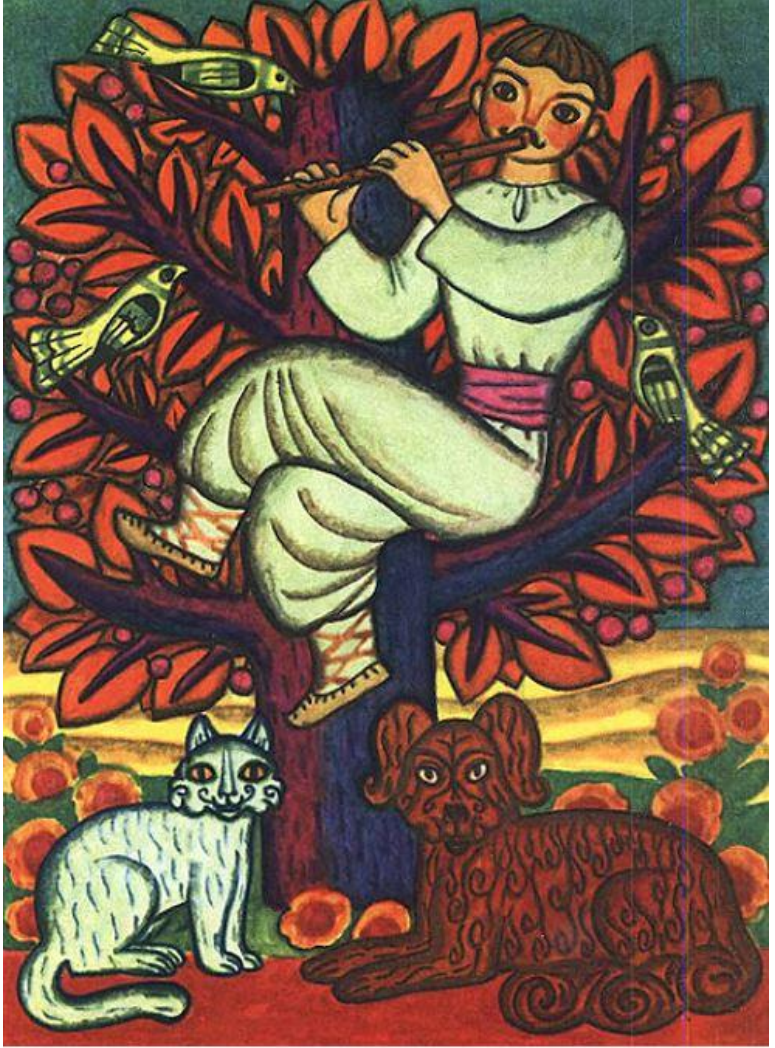

"जब मैं जा रहा था, मेरी मुलाकात एक आदमी से हुई जो इस कुत्ते को मार डालने वाला था. इसलिए मैंने आगे बढ़कर उस कुत्ते को खरीद लिया."

फिर मां ने उसे कुछ फिर और पैसे दिए और उससे कहा कि वो फिर जाकर डबलरोटी खरीदकर लाए. लड़का पैदल जा रहा था तभी उसकी नज़र एक आदमी पर पड़ी जो एक बिल्ली को ले जा रहा था.

"हैलो, सर", युवा ने कहा.

"नमस्ते!"

"आप कहां जा रहे हैं सर?"

"जंगल में. मैं इस बिल्ली को वहां ले जा रहा हूं."

"आप उसे जंगल में किसलिए ले जा रहे हैं?"

"उसे फांसी देने के लिए. यह बिल्ली बड़ी उपद्रवी है. देखो, मैं घर में कोई खाना नहीं रख सकता हूं. जैसे ही मैंने इसे नीचे रखता हूं, वो वैसे ही सब खाना हजम कर जाती है."

"फिर आप उसे मुझे बेच दें?"

"क्या तुम उसे खरीदोगे?"

"आप उसकी क्या कीमत लेंगे?"

"मैं उसके लिए तुमसे कोई मोलभाव नहीं करूंगा. तुम जो भी दोगे वो मैं ले लूंगा."

इसलिए उस युवक ने उस आदमी को वे पैसे दे दिए जो उसकी मां ने उसे डबलरोटी खरीदने के लिए दिए थे, और फिर वो बिल्ली को लेकर घर चला गया.

"अरे डबलरोटी कहां है?" उसकी मां ने पूछा, जब लड़का घर पहुंचा.

"मैंने कोई डबलरोटी नहीं खरीदी."

"तुमने वो क्यों नहीं किया? फिर तुमने उन पैसों का क्या किया? तुमने कोई दूसरा प्राणी तो नहीं खरीदा?"

"मुझे डर है कि मैंने वही किया," लड़के ने स्वीकार किया.

"तो इस बार तुमने क्या खरीदा?"

"यह बिल्ली. एक आदमी उसे फांसी देने के लिए जंगल में ले जा रहा था. मुझे बिल्ली के ऊपर बड़ा तरस आया, मैंने उसे उठाया और उसे खरीद ली!"

"ठीक है, बेटे, यहां कुछ और पैसे हैं. लेकिन देखो तुम अब कोई और प्राणी मत खरीदना, क्योंकि घर में डबलरोटी का एक टुकड़ा तक नहीं बचा है."

युवक निकल पड़ा, और वो चलता रहा और तब तक चलता रहा जब तक कि उसकी नज़र एक आदमी पर नहीं पड़ी जो एक सांप को पीट-पीट कर मार रहा था.

"आप ऐसा क्यों कर रहे हैं सर?" लड़के ने पूछा. "बेहतर होगा कि आप मुझे वो सांप बेच दें!"

"तो फिर तुम उसे खरीद लो!" आदमी ने कहा. "मैं उसे बेंच दूंगा."

"मुझे उसके लिए कितना देना होगा?"

"तुम जो दे सकते हो दे दो, और मैं उसे स्वीकार कर लूंगा."

फिर युवक ने उसे अपने सारे पैसे दे दिये. वो आदमी उन्हें लेकर चला गया.

तभी सांप बोला.

सांप ने कहा, "मुझे मृत्यु से बचाने के लिए तुम्हारा धन्यवाद, अच्छी आत्मा. देखो, यह अंगूठी ले लो. जब तुम्हें किसी चीज़ की आवश्यकता हो, तो अंगूठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालना, और तब तमाम नौकर तुरंत दौड़े आयेंगे. वे तुम्हारे दिए गए सभी आदेशों का पालन करेंगे और तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेंगे."

युवक ने अंगूठी ली और वो घर चला गया. कुटिया के पास आकर उसने अंगूठी एक हाथ से, दूसरे हाथ में उछाली, और आश्चर्य! तुरंत सेवक प्रकट हुए. जितने वो गिन सकता था उससे कहीं अधिक!

"मेरे लिए डबलरोटी लेकर लाओ!" उसने नौकरों से कहा.

जैसे ही उसने यह कहा, वे उसके लिए बहुत सारी डबलरोटियां लेकर आये. उतनी डबलरोटियां वो तक गिन सकता था! फिर लड़का घर में दाखिल हुआ.

"ठीक है, मां, अब से हमें डबलरोटी खरीदने नहीं जाना पड़ेगा. एक सांप ने मुझे एक जादुई अंगूठी दी है: मैं बस उसे एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालता हूं, फिर तुरंत कई नौकर एक साथ दौड़े हुए आते हैं. वे सब कुछ करते हैं जो मैं उन्हें बताता हूं और वे मेरी हर इच्छा पूरी करते हैं."

"सांप ने तुम्हें ऐसी अंगूठी क्यों दी?

"क्योंकि मैंने उसे मृत्यु से बचाया. एक आदमी उसे मार डालना चाहता था, परन्तु आपने मुझे जो पैसे डबलरोटी लाने के लिए दिए थे उनसे मैंने वो सांप खरीद लिया."

फिर उनके पास किसी चीज की कमी नहीं थी. और कुत्ता और बिल्ली भी उनके साथ रहने लगे.

जब भी युवक को कुछ चाहिए होता था, वह बस अंगूठी उछालता था और नौकर उसकी इच्छा पूरी करने के लिए दौड़ पड़ते थे.

आख़िरकार उसने फैसला किया कि अब उसके शादी करने का समय आ गया था.

"मां," उसने कहा, "कृपा जाएं और राजकुमारी से पूछें कि क्या वो मेरी पत्नी बनेगी."

फिर उसकी मां राजकुमारी के पास गई और उन्होंने उसे अपने आने का कारण बताया.

"ठीक है," राजकुमारी ने कहा, "अगर आपका बेटा मेरे लिए एक जोड़ी चप्पल बनाएगा जो मुझे बिल्कुल फिट बैठेंगी, तो मैं उससे शादी कर लूंगी."

मां अपने बेटे के पास घर लौटी.

"राजकुमारी कहती है," मां ने बेटे से कहा, "यदि तुम उसके लिए एक जोड़ी चप्पल बनाओगे जो उसे अच्छी तरह से फिट बैठें, तो वो तुमसे शादी करेगी."

"बहुत अच्छा," बेटे ने कहा, "मैं उसके लिए चप्पलें बनाऊंगा."

शाम को युवक बाहर आंगन में गया, उसने अंगूठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछाला, और पलक झपकते ही नौकर दौड़े हुए आए.

"सुबह तक," लड़के ने उनसे कहा, "मेरे पास सोने के कपड़े से बनी और चांदी की परत से सिली हुई चप्पलों की एक जोड़ी होनी चाहिए, और वे चप्पलें राजकुमारी को अच्छी तरह से फिट आनी चाहिए."

अगली सुबह जब लड़का उठा, तो चप्पलें बिल्कुल तैयार थीं और फिर लड़के की मां उन्हें राजकुमारी के पास ले गई.

राजकुमारी ने उन्हें पहना और वे चप्पलें उसे बिल्कुल फिट आयीं.

"अपने बेटे से कहें," राजकुमारी ने कहा, "कि एक रात में वो मेरे लिए एक शादी की पोशाक सिले. वो पोशाक न तो बहुत लंबी हो, न बहुत छोटी, न बहुत तंग और न ही बहुत ढीली, और वो पोशाक मेरे अलावा किसी और को फिट नहीं आएं."

महिला अपने बेटे के पास घर लौट आई.

"राजकुमारी कहती है," मां ने बेटे से कहा, "कि तुम्हें एक रात में, उसके लिए एक शादी की पोशाक सिलनी होगी जो न तो बहुत लंबी हो, न बहुत छोटी हो, न बहुत तंग हो और न ही बहुत ढीली हो, और वो पोशाक राजकुमारीके अलावा किसी और पर फिट न हो."

"बहुत अच्छा," बेटे ने कहा. "अब आप सो जाओ, मां, और मैं वो सब कुछ करूंगा जो राजकुमारी ने मुझसे कहा है."

जब उसकी मां सोने चली गई, तो युवक बाहर आंगन में गया और अंगूठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछला. पलक झपकते ही अनगिनित नौकर वहां आए!

"सुबह तक," लड़के ने कहा, "मेरे पास कपड़े से बनी एक पोशाक हो जो सूरज की तरह चमकती हो, और वो राजकुमारी के अलावा किसी और पर फिट न हो."

"बहुत अच्छा, सब कुछ ठीक वैसे ही होगा जैसा आप चाहते हैं."

फिर युवक सोने चला गया.

अगली सुबह जब वह उठा, तो उसने अपनी मां से कहा: "अब, मां, आप वो पोशाक राजकुमारी के पास ले जाएं. देखते हैं इस बार राजकुमारी क्या कहती है."

"लेकिन पोशाक कहां है, मेरे बेटे?" उसकी मां से पूछा. "मुझे वो कहीं दिखाई ही नहीं दे रही है."

युवक मेज के पास गया, उसने पोशाक उठाई - और फिर उनकी कुटिया ऐसी चमक उठी मानो अंदर सूरज आ गया हो.

"वो यहां है, मां, मेज़पोश के ठीक नीचे. आप उसे राजकुमारी के पास ले जाएं!"

फिर मां ने पोशाक लपेटी और वो उसे राजकुमारी के पास ले गई.

"अच्छा, अब आप हमें क्या बताने आई हैं, मेरी अच्छी औरत?" राजकुमारी ने पूछा.

"मैं तुम्हारे लिए शादी की पोशाक लाई हूं," महिला ने उत्तर दिया.

जैसे ही उसने पोशाक खोली, राजकुमारी के कक्ष में सब कुछ चमक उठा.

राजकुमारी ने उसे पहना, दर्पण में खुद को देखा और फिर वो खुशी से उछल पड़ी क्योंकि उस पोशाक में वो बहुत सुंदर लग रही थी. वह सूर्य के समान उज्ज्वल होकर अपने कक्ष में इधर-उधर घूमती रही.

"ठीक है, मेरी अच्छी औरत," राजकुमारी ने कहा, "अपने बेटे को मेरे महल से, खड्ड के उस पार चर्च तक, एक पुल बनाने को कहें, जहां हमारी शादी होगी. और वो पुल चांदी और सोने से बना हो. जब वो तैयार हो जाएगा, तब हम शादी करने जायेंगे."

और वह मां अपने बेटे के पास घर वापिस गई.

"राजकुमारी ने कहा है," मां ने अपने बेटे से कहा, "कि तुम्हें उसके महल से खड्ड के पार चर्च तक एक पुल बनाना होगा. और पुल पल सोने और चांदी का बना होना चाहिए."

"बहुत अच्छा," उसके बेटे ने उत्तर दिया. " मां आप जाओ और लेट जाओ, और आराम करो."

उस रात जब सभी सो रहे थे, तब युवक बाहर आंगन में गया और उसने अंगूठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछाला. फिर इतने सारे नौकर आए, कि उनके लिए आंगन में जगह कम पड़ गई.

"सुबह तक," उसने नौकरों से कहा, "मुझे राजकुमारी के महल से खड्ड के उस पार के चर्च तक, जहां हमारी शादी होगी, चांदी और सोने का एक पुल बनाना होगा. और जब राजकुमारी और मैं वहां जाएं, तो वहां सड़क के दोनों ओर सेब, नाशपाती, चेरी और पल्म के पेड़ पूरी तरह से खिले हुए हों; और जब तक हम चर्च से वापस आएं तब तक सब फल पक जाएं."

"बहुत अच्छा," नौकरों ने कहा. "सुबह तक ठीक वैसा होगा जैसा आप चाहते हैं."

अगली सुबह जब युवक उठा, फिर वह बाहर गया और उसने पुल और दोनों तरफ खिले हुए बगीचे के पेड़ों को देखा. फिर वो अपनी मां के पास गया.

"मां," उसने कहा, "जाओ और राजकुमारी से कहो कि पुल तैयार है और अब वो शादी करने के लिए चर्च में आ सकती है."

मां ने जाकर राजकुमारी को यह बात बताई.

"मैंने पहले ही पुल देख लिया है," उसने कहा. "वो वास्तव में बहुत सुंदर है. अपने बेटे से कहें कि मैं कल उससे शादी करूंगी."

फिर महिला अपने बेटे के पास घर लौट आई.

"राजकुमारी कहती है कि तुम कल चर्च जाना, और वो तुमसे शादी करेगी."

रात के दौरान, युवक ने अपने लिए एक महल बनवाया और अगले दिन चर्च गया. उसने राजकुमारी से शादी की, और जब वे पुल पार करके वापस लौटे तो सभी फल पक गए थे: सेब और नाशपाती, चेरी और प्लम, और साथ में कई अन्य फल भी थे.

फिर युवक और राजकुमारी नए महल में आए जहां उन्होंने शादी का जश्न मनाया. वे कुछ समय तक वहां ख़ुशी से रहे, और कुत्ता और बिल्ली भी उनके साथ रहे.

एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से कहा: "मुझे बताओ, प्रिय, जब तुम्हारे पास मेरा माप भी नहीं था फिर तुम सही माप की चप्पल और पोशाक बनाने में कैसे कामयाब रहे? और तुमने एक ही रात में इतना भव्य पुल कैसे बनाया?" और तुम्हें इतना सारा सोना और चांदी कहां से मिला?"

"यह अंगूठी देखो?" युवक ने जवाब दिया. "जब भी मैं इसे एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालता हूं, कई नौकर दौड़ते हुए आते हैं. उनकी संख्या इतनी होती है कि आप उन्हें गिन तक नहीं सकते हैं! यार्ड उनसे भर जाता है. वे ही थे जिन्होंने चप्पल और पोशाक बनाई थी; वे ही थे जिन्होंने पुल और बनाया था. जिस महल में हम रहते हैं वहां वे ही मेरा सब काम करते हैं."

उस रात राजकुमारी ने अपने पति के गहरी नींद में सो जाने तक इंतजार किया. फिर उसने चुपचाप उसकी अंगूठी उतारी, उसे एक हाथ से दूसरे हाथ में उछाला और फिर तुरंत तमाम नौकर आ गए. जितने वो गिन सकती थी उससे कहीं अधिक!

"तुरंत घोड़े और एक गाड़ी लाओ," उसने नौकरों से कहा. "मैं अपने महल में वापस जाऊंगी. फिर तुम इस महल को एक खोखले खंभे में बदल देना, जिसमें मेरे पति के खड़े होने या सिर्फ लेटने के लिए पर्याप्त जगह हो, और फिर उसे तुरंत समुद्र के पार ले जाना. और ध्यान से तुम उन्हें जागना मत. उसे तब तक नींद से मत उठाना जब तक वह खंभे के अंदर न कैद हो जाए!"

"बहुत अच्छा," नौकरों ने कहा. "सब ठीक वैसे ही होगा जैसा आप चाहती हैं."

राजकुमारी बाहर आई और आश्चर्य का आश्चर्य! एक कोच उसका इंतज़ार कर रहा था. वो उसमें बैठी और चली गयी. और पलक झपकते ही युवक का महल एक खोखला खंभा बन गया, और नौकर उसे समुद्र के पार ले गए.

अगली सुबह, जब युवा जागा तो उसने उस भयावहता के आतंक को महसूस किया! उसकी पत्नी, महल और अंगूठी गायब थे. उसके पास कुछ भी नहीं था. वहां केवल वह खम्भा था जिसमें वह खड़ा था. वो बाहर निकलना चाहता था, लेकिन वहां कोई दरवाज़ा नहीं था. उसने एक दीवार और फिर दूसरी दीवार को खोजा, लेकिन वो बाहर नहीं निकल सका क्योंकि शीर्ष पर केवल एक छोटी सी खिड़की थी. इसलिए वो वहीं रुक गया. उस बेचारे के खाने के लिए भी कुछ नहीं था. यदि कुत्ता और बिल्ली उसके साथ न होते तो वो निश्चित रूप से मर गया होता, क्योंकि उन्हें भी खंभे में छोड़ दिया गया था.

वे खिड़की से बाहर निकलने में कामयाब रहे. कुत्ता खेतों में भागता, खेत-मजदूर के लंच बैग से रोटी का एक टुकड़ा चुराकर उसे खम्भे के पास ले आता. फिर बिल्ली रोटी को अपने दांतों से पकड़कर, खंभे पर चढ़ जाती और युवक को दे देती. इस तरह उन्होंने किसी तरह अपना गुजारा चलाया.

फिर कुत्ते ने बिल्ली से कहा: "देखो, अब जब हमारे मालिक के पास कुछ रोटी बची है, तो कितना अच्छा होगा अगर हम समुद्र पार करें? हो सकता है कि हम किसी तरह उस अंगूठी को भी वापस पा सकें."

"चलो चलें!" बिल्ली ने उत्तर दिया.

फिर वे चले. वे दौड़े और वे समुद्र के किनारे तक दौड़ते रहे. फिर बिल्ली, कुत्ते की पीठ पर बैठ गई और कुत्ता तैरने लगा. वो काफी देर तक तैरता रहा, लेकिन अंत में वे विपरीत किनारे पर पहुंच गये. जब वे पानी से बाहर निकले तो फिर वे गर्म होने के लिए कुछ देर तक धूप में बैठे रहे.

"अब," कुत्ते ने बिल्ली से कहा, "चलो महल में चलते हैं. हमें अपनी योजना पर तेजी से काम करना होगा. अगर हमें अंगूठी मिल जाती है, फिर हमें जितनी तेजी से हो सकेगा उतनी तेजी से वापस दौड़ना होगा ताकि राजकुमारी हमें पकड़ न पाए."

"ठीक है," बिल्ली ने कहा. "चलो चलते हैं!"

फिर वे दोनों भागे. वे दौड़े और वे दौड़े, वे आराम करने के लिए कहीं नहीं रुके. वे एक बड़े जंगल में से होकर भागे. वहां अचानक उनकी नज़र एक ऊंची दीवार से घिरे महल पर पड़ी.

फिर कुत्ते ने बिल्ली से कहा: "तुम यहीं जंगल के किनारे रहो. मैं बड़ा हूं, इसलिए मैं जाऊंगा और देखूंगा कि क्या मुझे महल में अंदर घुसने और अंगूठी चुराने का कोई रास्ता मिलता है."

इसलिए बिल्ली वहीं रुक गई, और कुत्ता महल के द्वार तक भागा, लेकिन चूंकि वहां सैनिक पहरा दे रहे थे, इसलिए वो रुक गया और वो सुनने लगा.

उसने मुख्य रक्षक को सैनिकों से यह कहते हुए सुना: "ध्यान रखना और फाटकों की अच्छी तरह निगरानी रखना, कहीं कोई दुश्मन घुस न पाए."

"चिंता न करें," सैनिकों ने कहा. "हम किसी को भी अंदर नहीं जाने देंगे, एक पक्षी को भी नहीं, किसी चूहे को भी नहीं."

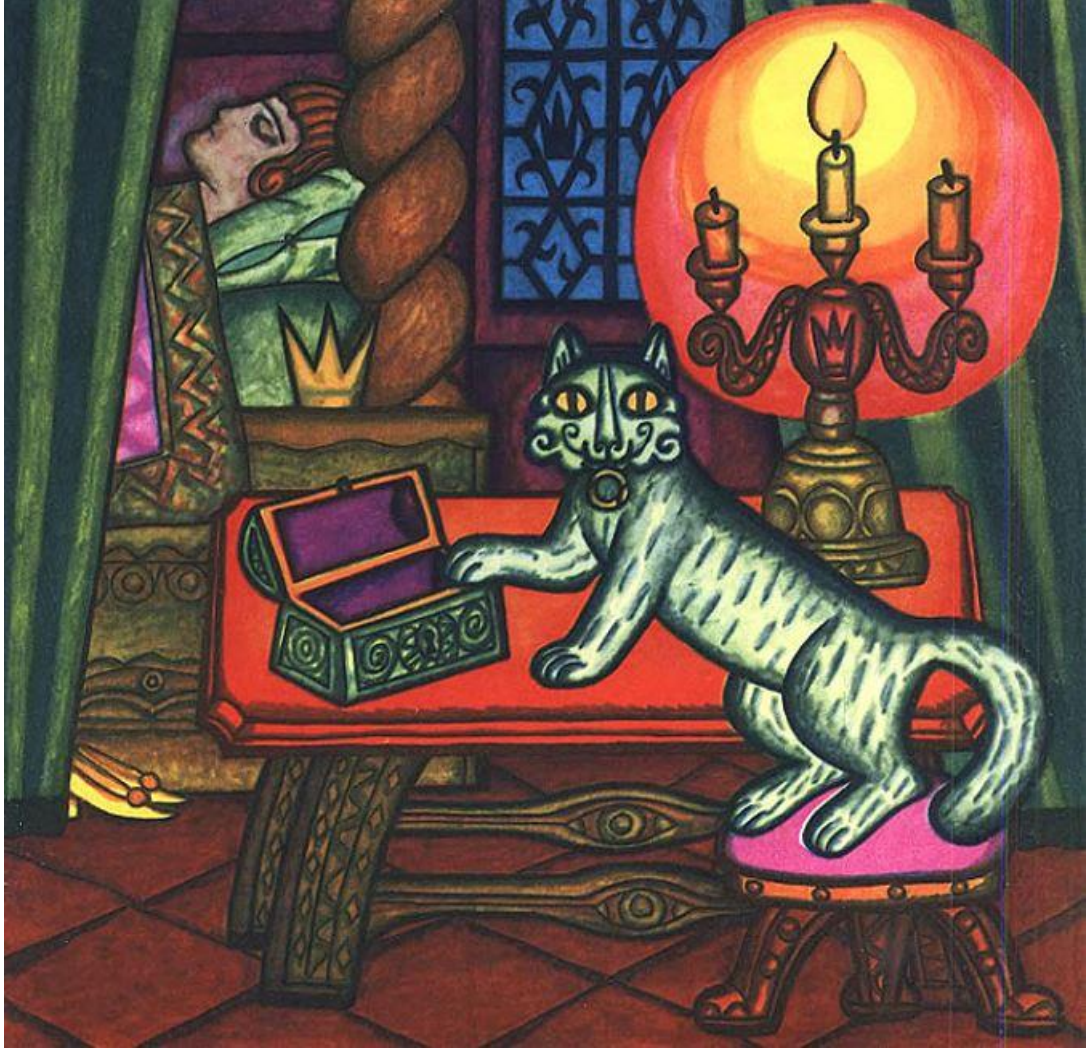

खैर, कुत्ता दीवार के चारों ओर कुछ बार दौड़ा, और फिर बिल्ली के पास लौट आया.

"हम कुछ नहीं कर सकते," उसने उदास होकर कहा. "महल के चारों ओर की दीवार इतनी ऊंची है और द्वार पर पहरेदार इतने सतर्क हैं कि कोई भी अंदर नहीं घुस सकता हैं, यहां तक कि एक पक्षी भी नहीं, एक चूहा भी नहीं."

"तुम यहीं रहो," बिल्ली ने कहा, "अब मैं जाकर अपनी किस्मत आज़माती हूं."

और फिर बिल्ली गयी. वह महल की ओर भागी और उसने भी ऊंची दीवार और द्वार पर पहरेदारों को देखा. उसने दीवार के चारों ओर एक चक्कर लगाया और उसे दीवार के पास एक पेड़ मिला. वो पेड़ पर चढ़ गई, आंगन में कूद गई और राजकुमारी की खिड़की के नीचे टहलने लगी.

तभी राजकुमारी संयोग से खिड़की के पास आई और उसने बिल्ली को आंगन में घूमते हुए देखा. राजकुमारी ने बिल्ली को अपने कक्ष में आने दिया. बिल्ली कमरे में चारों ओर घूमती रही, हर कोने को खोजती रही कि कहां राजकुमारी ने अंगूठी छिपाई थी... अंत में उसे अंगूठी की जगह मिल गई, तो फिर उसने सब लोगों के सोने का इंतजार किया. फिर उसने अंगूठी उठाई और भाग निकली.

कुत्ता और बिल्ली समुद्र के किनारे भागे और फिर एक पल भी बर्बाद किए बिना, बिल्ली, कुत्ते पर चढ़ गई जो पानी में कूद गया और तैरने लगा.

जब वे लगभग समुद्र पार कर चुके थे और किनारा साफ दिखाई दे रहा था, तब कुत्ते ने बिल्ली से कहा.

"तुम अंगूठी अच्छे से पकड़े तो हो न?"

बिल्ली उत्तर नहीं दे सकी, क्योंकि अंगूठी उसके मुंह में थी. लेकिन कुत्ते ने बिल्ली को शांति से नहीं रहने दिया.

"सुनो, मैंने पूछा कि क्या तुम्हारे पास अभी भी वो अंगूठी है! अगर तुमने जवाब नहीं दिया, तो मैं तुम्हें समुद्र में फेंक दूंगा."

बिल्ली फिर चुप रही और उससे कुत्ता गुस्सा हो गया.

"मैं आखिरी बार पूछ रहा हूं. या तो तुम मेरी बात का जवाब दो नहीं तो जाओ!" उससे बिल्ली डर गई.

"मैं अंगूठी को पकड़े हूं!" बिल्ली चिल्लाई.

और फिर बिल्ली के मुंह खोलने से अंगूठी समुद्र में गिर गई! उसके बाद, बिल्ली चुप रही और उसने कोई दूसरा शब्द नहीं बोला.

जैसे ही वे किनारे पर पहुंचे, बिल्ली, कुत्ते पर बरस पड़ी.

"तुम फलां-फलां! यह सब तुम्हारी ही गलती है. तुमने ही अंगूठी गिराई! तुम्हें प्रश्न पूछने की क्यों जरूरत पड़ी? अब, सीधे अंदर कूदो और उसे खोजो! जैसा तुम्हें बताया गया है वैसा ही करो!"

कुत्ते ने अंदर गोता लगाया और इधर-उधर हाथ-पैर मारे, लेकिन उसे कोई अंगूठी नहीं मिली! फिर वे नए सिरे से झगड़ने लगे लेकिन, स्वाभाविक रूप से, उससे कोई फायदा नहीं हुआ. आख़िर में बिल्ली ने एक सुझाव दिया.

"चलो, समुद्र के किनारे पर टहलें और जो भी मिले उससे पूछें कि क्या वो समुद्र में से हमारे लिए अंगूठी ला सकता है." कुत्ता उस बात से सहमत हो गया.

इसलिए वे गर्म होने के लिये कुछ देर धूप में बैठे रहे, और फिर समुद्र के किनारे चलने लगे. वे जिस किसी से भी मिले, और जिस किसी को भी उन्होंने देखा, उससे उन्होंने पूछा कि क्या वो समुद्र में से अंगूठी ला सकता थे, या क्या वो किसी ऐसे व्यक्ति को जानते थे जो उसमें उनकी मदद कर सके. लेकिन उन्हें कोई भी मदद करने वाला नहीं मिला.

फिर बिल्ली को एक नया विचार आया.

"तुम्हें पता है क्या?" उसने कहा. "चलो पानी के किनारे चलें और कोई केकड़ा या मेंढक पकड़ें."

"ठीक है," कुत्ते ने कहा. "चलो चलें!"

समुद्र तट के किनारे बहुत सारे मेंढक थे और जब भी वे उनमें से किसी एक को पकड़ते, तो वे कहते: "वादा करो तुम हमारे लिए समुद्र से अंगूठी लेकर आओगे. यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो हम तुम्हें जाने नहीं देंगे!"

जैसे ही मेंढक की समझ में आया कि उन्हें क्या चाहिए, उसने जवाब दिया: "मैं वादा करता हूं! मुझे पता है कि तुम्हारी अंगूठी कहां है. मुझे जाने दो, और मैं अंगूठी तुम्हारे पास लाऊंगा."

लेकिन जब वे उसे छोड़ देते थे, तो मेंढक तैरकर दूर चला जाता था और अंगूठी के बारे में सबकुछ भूल जाता था. और जल्द ही मेंढकों को उनका कोई डर नहीं रहा. जब भी वे मेंढक पकड़ते, वो तुरंत कहता: "मैं तुम्हारे लिए अंगूठी लाऊंगा." और फिर वे उसे जाने देते थे.

इसलिए वे दिन भर और सांझ तक समुद्र के किनारे भटकते रहे. तभी एक मेंढक का बच्चा अचानक उछलकर बाहर आया और उन्होंने उसे पकड़ लिया.

"क्या तुम्हें पता है कि वो अंगूठी समुद्र में कहां है?" उन्होंने पूछा.

"मुझे नहीं पता... टर्र, टर्र!"

"अगर तुम नहीं पता है, तो फिर हम तुम्हें, तुम्हारी मां के पास वापस नहीं जाने देंगे."

जब बूढ़ी मेंढकी मां ने यह सुना तो वो रेंगकर पानी से बाहर निकलकर आई. वो कितनी बड़ी मेंढकी थी, बाल्टी जितनी बड़ी!

"मेरे बच्चे को चोट मत पहुंचाओ. मैं तुम्हारे लिए समुद्र से अंगूठी लाऊंगी."

"बहुत अच्छा," उन्होंने कहा. "लेकिन जब तक आप अंगूठी लेकर वापस नहीं लाती हैं, तब तक हम आपके बच्चे को अपने पास ही रखेंगे. जैसे ही आप हमें अंगूठी देंगी, हम छोटे बच्चे को छोड़ देंगे."

विशाल मेंढकी समुद्र में कूदी, उसे अंगूठी मिली और वो उसे कुत्ते और बिल्ली के पास लाई. उन्होंने अंगूठी पहचान ली, मेंढक के बच्चे को जाने दिया और फिर वे खंभे की ओर भागे.

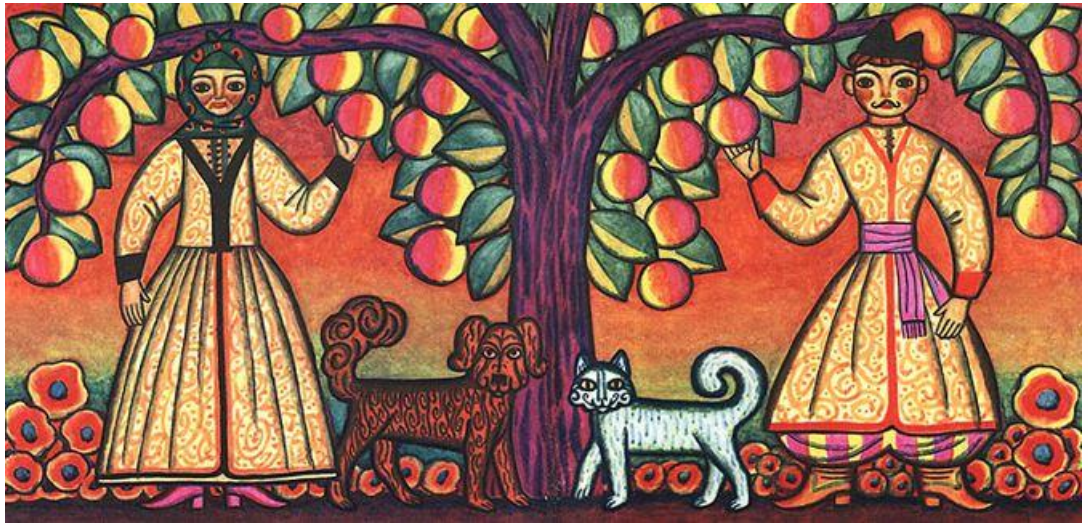

जब तक वे अपने मालिक के पास पहुंचे, तब तक उसकी सारी रोटी खत्म हो चुकी थी. दो दिनों तक उसने कुछ भी नहीं खाया था, और अब कमज़ोरी से उसकी हड्डियां दिखने लगीं थीं. बिल्ली तेजी से खिड़की पर चढ़ गई और उसने उसे वो अंगूठी दे दी. युवा ने अंगूठी को एक हाथ से दूसरे हाथ में उछाला, और नौकर तुरंत दौड़े हुए आए. जितने वो गिन सकता था उससे कहीं अधिक!

"इस खंभे को वहीं ले जाओ जहां वो पहले था, और इसे फिर से एक महल में बदल दो, और मेरी पत्नी और मां को अंदर रहने दो."

आपने जो कहा है, हम वही करेंगे.

उसके बाद युवक ने राजकुमारी से महल छोड़कर जाने को कहा, और फिर वो अपने वफादार परिवार - अपनी मां, अपनी बिल्ली और कुत्ते - के साथ हमेशा खुशी से रहा.